



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

The Tribune

दिनांक

22-8-22

पृष्ठ संख्या

५

कॉलम

7-8

## Best Research Centre Award for agri varsity

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, AUGUST 21

The fodder section of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) has been awarded the Best Research Centre Award for the year 2021-22 at the national level for its excellent research on jowar crop.

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj said Dr Trilochan Mohapatra, Director General, Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, had presented the award at the 52nd Annual Group Meeting of the All India Coordinated Research Project (Jowar) organised by the Indian Institute of Millets Research, Hyderabad.

He said the fodder section of the university had done commendable work in the develop-

'Commendable' work  
done on development  
of jowar varieties

ment of improved varieties of jowar, management of nutrients like phosphorus and potash in the crop and seed production of fodder jowar. So far, 13 improved varieties of jowar have been produced, out of which CSV-53F, HJH-1513 and HJ-1514 were recently developed with high protein content and digestible properties.

"CSV 53F variety will be cultivated in the states of Gujarat, Rajasthan, Punjab, Haryana, Uttarakhand, Maharashtra, Karnataka and Tamil Nadu while the HJH-1513 and HJ-1514 varieties have been identified for cultivation in Haryana", said Prof Kamboj.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाप्ति पत्र का नाम | दिनांक  | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---------------------|---------|--------------|------|
| दीर्घ वृग्नि        | 21-8-22 | १            | ३-४  |

वीसी बोले, ज्यार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ

# हक्कि का चारा अनुभाग राष्ट्रीयास्तर पर सर्वश्रेष्ठ



हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रा. बीआर कामोज।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्यार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय केन्द्र अनुसंधान संस्थान,

### एचजेरच 1513 व 1514 हरियाणा के लिए चिह्नित

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्यार की एचजेरच 1513 व एचजे 1514

### ज्यार की नई किस्मों की वह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अस्ट्रोफैक डॉ. जीत रमेश लाल ने ज्यार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन तो अच्छा त पालस्टीरिया अधिक सालों के कारण ये प्रयुक्ति के लिए बहुत ज़रूर है। उन्होंने बताया ज्यार की नीतियाँ ५३ प्रति घंटा कटाई वाली किस्म है जिसको गुजरात, गोजायान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बंगलादूर, कर्नाटक व तमिलनाडू सरकारों के लिए विविध किया जाये हैं। हन विस्त की हरे चारे की ओरेट पेन्डर ४३ विवरण प्रति हैक्टेएक्ट है।

किस्में हरियाणा राज्य में विजाइ के मीठी व ज़्यादी किस्म है जिसमें ८.६ लिए चिह्नित की गई है।

इनमें से एचजेरच 1513 एक

प्रतिशत प्रोटीन व ५३ प्रतिशत पाचनशीलता है।

इसकी हरे चारे की ओसत पेन्डर

कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पेन्डर ६६४ व सुखे चारे ७१७ विवरण प्रति हैक्टेएक्ट है। यह

### 13 किस्मों विकसित

विश्वविद्यालय के द्वारा दी गई अनुसंधान ले बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने दाल ही के बाहे ने ज्यार की उन्नत किस्मों को विकास दिया है। ज्यार ने फलकोल्ड व पेन्डर जैसे पेन्डर तालों के प्रबल तरह दाल दारे वाले ज्यार के बीज उत्पादक में बहुत सराहनीय कार्य किया। अब लक्ज ज्यार की १३ उन्नत किस्मों विकसित की गई है।

की पेन्डर १६१ विवरण प्रति हैक्टेएक्ट है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| सुमाख्यार पत्र का नाम | दिनांक  | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-----------------------|---------|--------------|------|
| दोनों अनुसंधान        | २१.८.२२ | ५            | १-५  |

# उपलब्धि • कुलपति बोले- ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ हरियाणा कृषि विवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड

मास्कर न्यूज़ | हिसार



एचएच२ में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

एकाध्य के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अधिकारी भारतीय समिति अनुसंधान परिषद्वारा (ज्वार) की ३२वीं वार्षिक सम्मुखीन में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. श्रीलक्ष्मि महाशत्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हल्की ही के बीच में ज्वार की उत्पत्ति किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश

जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की १३ उत्पत्ति किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-५३

एफ किस्म, एचजेएच-१५१३ व एचजे-१५१४ हल्की ही में विकसित की गई हैं उन्होंने उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को ब्राह्महीन और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साधित होंगी।

ज्वार की दो किस्में राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच १५१३ व एचजे १५१४ किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई है। इनमें से एचजेएच १५१३ एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे ओर असत पैदावार ७१७ किलोटल प्रति हेक्टेएर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें ८.६ प्रतिशत ग्रोटीन व ५३ प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोर कोडों के प्रति सहनशील है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोर कोडों के प्रति सहनशील है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
पंजाब में सरी

दिनांक  
२१.४.२२

पृष्ठ संख्या  
१

कॉलम  
६४



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काश्मोज।

## हकृति के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर एग्रिलोजिकल सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार, 20 अगस्त (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उन्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काश्मोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फायरफोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्वार के बीच उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत में अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसबी-53 एक किस्म, एचजेएस-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डॉ. एस. फोगाट,

एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, डॉ. एस. रम्मा, डॉ. पी. सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| सम्बन्धित पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-----------------------|--------|--------------|------|
| दिनांक २१.८.२२        | २      | १-५          |      |

# हरियाणा कृषि विवि के चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

कुलपति बोले-ज्वार की नई किस्मों से किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ

जगरण संकादयाल, हिसारः चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. बीआर काम्पोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) को 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डा. त्रिलोचन महापात्र ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रौ. बी.आर. काम्पोज।

में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, 13 उन्नत किस्मों विकसित की हैं। ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की

इनमें प्रोटीन की मात्रा और पाचनशीलता अधिक

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने कहा कि इस किस्म की हरे चारे की ओसत पैदावार 483 विंडल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बारर जैसे कीड़ों के प्रति रोधी है व ये लीफ स्पैट व शूटी स्ट्रॉप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई दी।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक  | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|---------|--------------|------|
| ‘अभूत उजाता’       | २१.४.२२ | ५            | ६-८  |

उपलब्धि

एचएयू के चारा अनुभाग को उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए सम्मान

## चारा अनुभाग को सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड

अभूत उजाता ब्लूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक सम्मह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के बारों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरेस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ एक कटाई बाली किस्म है, जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए विस्तृत किया



हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। संयोग

विकसित की गई है, जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवॉर्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी।

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएँ : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया कि ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई बाली किस्म है, जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए विस्तृत किया

गया है; इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।

इन वैज्ञानिकों में डॉ. पर्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। ज्वार की एचजे-एच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में विज़ाइ के लिए चिह्नित की गई हैं।

यह हाइब्रिड किस्म औसतन 717 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की पैदावार देती है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एस आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा, डॉर्मी सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक  | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|---------|--------------|------|
| ‘उज्जीत सभाया’।    | २१.४.२२ | ५            | १-५  |

# हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को देंगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 20 अगस्त (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उच्चाह अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह ज्ञानकरी द्वारा दुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अधिकृत भारतीय समनिकाय अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की ऊत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्कोस व पेटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य बहुत फायदेमंद साक्षित हो गया।

विषेष हैं जिनके दृष्टिकोण ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 ऊत किस्मों की विकासित की हैं।

इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचबीएच-1513 व एचने-1514 हाल ही

में विकासित की गई है, जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है।

उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि

ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए

पंजाब, हरियाणा, झज्जरांड, महाराष्ट्र कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए विनिष्ठ किया गया है। इस किस्म की होरे चारे की औसत पैदावार 483 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोर जैसे कीड़ों के प्रति रोधी है व ये लोक स्पॉट व गूटी रिहू बीमारी के प्रति प्रतिरोधी हैं। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकासित किया गया है। इन वैज्ञानिकों में डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डॉ.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खोड़, डॉ.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, मनजीत चिंह व सरिता देवी को जता है।

इसी प्रकार एवजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी होरे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोर कीड़ों के प्रति सहनशील है।

कृषि भारतविद्यालय के अध्यक्षाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचबीएच 1513 व एचने 1514 किस्में हरियाणा राज्य में विवार्ड के लिए विनिष्ठ की गई हैं। इनमें से एचबीएच 1513 एक कटाई वाली लड्डिड किस्म है और यसको होरे चारे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व दूसी किस्म है जिसमें 8.6



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम<br>समस्त धृपाणा | दिनांक<br>20.8.2022 | पृष्ठ संख्या<br>-- | कॉलम<br>-- |
|------------------------------------|---------------------|--------------------|------------|
|------------------------------------|---------------------|--------------------|------------|

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

समस्त हारियाणा नगर  
हिमार। चौथी चरण में हारियाणा कृषि  
विकासालय के बाहर अनुभाग की जल संकट पर  
उत्तर अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-  
22 का संचालक अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया  
गया है। विकासालय के कृषिविभाग से वी.आर.  
कालोड ने यह जाहाजरी देखे हुए घोषणा कि भारतीय  
कृषि अनुसंधान परिषद, नई विधि के अंतर्गत भारतीय  
कठार अनुसंधान संस्थान, हिंदूराजपुर द्वारा अनोन्यत  
अखिल भारतीय माननीय अनुसंधान परिषोळना  
(नजर), की 52वीं शारीरिक सम्मेलन वैकल्पिक रूप से उत्तरी  
परिषद के सम्बन्धित संघ वी.आर.विशेषज्ञ समाजवादी ने यह  
अवार्ड प्रदान किया। कृषिविभाग ने घोषणा कि  
विकासालय के बाहर अनुभाग ने हाल ही के बीच में  
ज्याद की उम्मीद इसके क्रियात्, नजर में फोकसोर दि-  
ये औटोटार और पोषक तत्वों के व्यापार के साथ चारों  
सलौं नजर के लौज उत्पादन में बहुत सरलीकृती कार्य  
किए हैं जिनके द्वितीय में अवार्ड दिया गया है। इन  
अनुभाग ने अब तक नजर की 13 जल किसी  
विकासित की है। इनमें से सीएसएल-53 एक किस्म,  
एसवीएच-1513 व एसवी-1514 हाल ही में

विकासित की गई है जिनके लिए पारा अनुभाव को  
यह असाइंस्ट्रामेंट किया गया है। उन्होंने इस डाकलिफ्ट  
के लिए अनुभाव के विभिन्नों को बाहरी और भी  
फरार की की थी किंतु किसी व यसको व पश्चात्याको के लिए  
पहला डाकलिफ्ट समर्पित होगी। जल्द की नई किसी  
की यह है विशेषजट-विशेषजटत्व के अनुभाव  
निर्देशक तथा जीव गम शर्तों जे जल्द की नई किसीको  
की विभिन्नताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन  
दीनों किसीमें प्रोटीन को याक़ा व पाचनशीलता  
अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए अचूत अनुभ  
है। उन्होंने बताया न्यूज़र को सोसायटी 53 एक एक  
कट्टाई वाली फिल्म है जिसके मुख्यालय, गवाहाल, पंचवाल,  
हरियाणा, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व  
गोविन्दगढ़ गांवों के लिए विकास किया गया है। इस  
फिल्म को हरे जीवों की अवसर प्रदानार 433 विकास  
प्रति हैट्टर है। यह सूख प्रलाप, स्ट्रेप बोर, जैसे कानूनों  
के प्रति रोधी है व ये लोक स्ट्रीट व बड़ी स्ट्रीट व्यापारों  
के प्रति प्रतिवेदी हैं। पारा अनुभाव के विभिन्नों द्वारा  
विकासित किया गया है। इन विभिन्नों में तो एक  
कृषी, एक के पारा, और एक सोसायट, सत्रापाल,  
एवं अन्यों की उल्लेखनीय प्रक्रिया दिए गये हैं।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
विवरण २०२२

दिनांक  
20.8.2022

पृष्ठ संख्या  
--

कॉलम  
--

## हृषि के चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

**कुलपति प्रो. कारबोज बोले,**  
**ज्वार की नई किस्मों का**  
**किसानों और पशुपालकों को**  
**होगा लाभ।**

चिराग टाइम्स न्यूज़

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग वो ज्वार फसल पर उच्च अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. कारबोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई किस्मों के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आवोडित अधिकृत भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) को 52वीं वार्षिक प्रशूष बैठक में उत्तरीक परिषद् के महानिदेशक डॉ. विलोचन महापात्र ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उत्तर किस्मों के विकास, ज्वार में फायफोरस व पोटाश जैसे धोषक तत्वों के प्रबोधन के साथ चारे चाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत साराहनीय कार्य किया है जिनके दृष्टिशक्ति वे अवार्ड दिया गया है। इस प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 पार्चनशीलता है। यह पर्यांतों के प्रति



### ज्वार की नई किस्मों की ये हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पार्चनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी-53 एक एक कटाई बाली किस्म है जिसको गुजरात, गोजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए चिन्हित किया गया है। इस किस्म को हरे चारे की औसत पैदावार 483 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फलाई, फ्लैम और जैसे कोहड़ी के ग्रीष्म गोथी है व ऐ लाफ़ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप औमारी के प्रति प्रतिरोधी है। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। इन वैज्ञानिकों में डॉ. पम्पी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डॉ.एम. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, वी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्ट्रेम और प्रकार पैदावर 1514 एक कटाई बाली कोड़ी के प्रति सहनशील है। इस किस्म किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार को विकसित करने का ब्रेय डॉ. पी. 664 व मूर्खे चारे की पैदावार 161 कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर., किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, प्रोटीन बाली किस्म है। यह पर्यांतों वी.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, मनजीत के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्ट्रेम सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसे और कोड़ी के प्रति सहनशील है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक    | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|-----------|--------------|------|
| हैलीटिस 12         | 22.8.2022 | --           | --   |

### हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति

की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के

ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होंगा लाभः कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज



प्रो. वी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार)

विकास, ज्वार में फास्कोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में

विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएः: विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक    | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|-----------|--------------|------|
| १०८२ स्थान सभापाल  | 20.8.2022 | --           | --   |

| हिसार: एचएयू के घारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

20 Aug 2022 183341



21 Aug 2022  
हरियाणा कृषि  
अनुसंधान संस्थान  
कार्यालय कार्यालय



21 Aug 2022  
कर्मालय भवन पर  
- बोर्डर से भी ज्ञान  
प्रसार कर देंगे।



21 Aug 2022  
गृहनालय, फिल्मा  
- अनुसंधान वर्षावार  
में यह अवार्ड समाप्ति

उत्तर की अद्युक्त किसिमी का विकासी और पशुपालकों को होता रहा। - गुरुराहित कर्मचार

हिसार, 20 अगस्त (हि.म.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के घारा अनुभाग की जगह परस्पर यह उत्कृष्ट अनुसंधानी के लिए गृहीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का लोरीबंध अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के गुरुराहित की ओर विकासी और अनुसंधान के द्वारा यह भौतिकीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कृषि कल्याण अनुसंधान संस्थान, हैट्टरायाक द्वारा आयोजित अधिकारी भारतीय कृषि अनुसंधान अनुसंधान परियोजना (एचए) की 52वीं वार्षिक अवधुत बैठक में उपरोक्त परिषद् के बहुमितीय शक्ति के द्वारा दिया गया अवार्ड प्रदान किया गया।

गुरुराहित से द्वारा यह विश्वविद्यालय के घारा अनुभाग में हाल ही के बाद से उत्तर की उत्कृष्ट किसिमी के विकास, जगह और क्रांतिकारी योग्यता जैसे पौष्टक सम्बन्धों के व्यवहार के साथ घारी घारी जगह के बीच उत्कृष्टता में बहुत लगाइनीय अर्थ किये हैं जिनके द्वितीय अवार्ड दिया गया है। इन अनुभाग में अब तक उत्तर की 13 उत्कृष्ट किसिमी विकसित की है। इनमें से नीयमनी-53 एक फिल्म, राष्ट्रीय-1513 व एचडी-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए घारा अनुभाग को यह जगह और प्रदान किया गया है। उन्हीने इस उपरोक्त के लिए अनुभाग के विकासी को दर्शाएँ ही और कहा कि ये किसी विकासी व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साधित होंगी।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान जिलेशास की ओर समाजी और जगह की अद्युक्त किसिमी की विशेषज्ञता और उत्कृष्ट करने द्वारा यहां कि इन दोनों किसिमी और गोटील की जगह व पशुपालकता अधिक होने के काम में विशेषज्ञता उत्तम है। उन्हीने द्वारा यहां उत्तर की नीयमनी-53 एक एक कटाई यादी किसिम है जिसके बहुत राष्ट्रीय, राज्यालय, राज्यालय, हरियाणा, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, बंगलादेश व लम्बिकाला राज्यों के लिए विकसित किया गया है।

कृषि भौतिकीय के अधिकारी द्वारा यहां के लिए विकसित की गई है। इनमें से एचडीए-1513 व एचडी-1514 किसिमी हरियाणा राज्य में विजेता के लिए विकसित की गई है। इनमें से एचडीए-1513 एक कटाई यादी हाइब्रिड किसिम है और इनमें से दोरी की ओर कर विकास करने वाली देवरैवर है। यह दोनों व जूनी किसिम है, जिसमें 5.6 प्रतिशत गोटील व 53 प्रतिशत पशुपालकीय है। यह दोनों दोनों के पास प्रतिशेषी व शुद्ध कलाई व स्टेम गोरक्ष कीमतों के पास उत्कृष्ट है। इन किसिमों को विकसित करने का लेय द्वारा योग्यता दी गयी है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| सम्प्रचार पत्र का नाम | दिनांक    | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-----------------------|-----------|--------------|------|
| सम्प्रचार पत्र        | 20.8.2022 | --           | --   |

# हकृति के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

सिटी पास न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को जल कामकाल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए गोदानपत्र स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। कुलपति प्रौ. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हिंदूरायड द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वय अनुसंधान परियोजना (ज्ञार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परियोजने के महानिदेशक डॉ. विलोचन महाराजा ने वह अवार्ड प्रदान किया।



सिटीपास न्यूज, हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रौ. बी.आर. काम्बोज।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्ञान की उन्नत किसी के विकास, ज्ञान में फारमोरम व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्ञान के ओर उत्पादन में बहुत महानीय कार्य किए हैं जिनके द्वारा ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्ञान की 13 उन्नत किसी विकासित की है। इसमें सीएससी-53 एक किसम, एचडीएच-1513 व एचडी-1514 हाल ही में विकासित की गई है जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक    | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|-----------|--------------|------|
| नाम - चौराजी       | 20.8.2022 | --           | --   |

### ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के हकूमि को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड

हिसार/ 20 अगस्त/ रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए गण्डीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ.



त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फार्म्सोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे बाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत

सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसबी-53 एफ किस्म, एचजे-एच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह

अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साधित होंगी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजे-एच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में विजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों टीम में डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एस आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, एन खगोड़, बीएल शर्मा, डीपी सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी शामिल हैं।